समस्त भारतवासियों की प्रेरणा, स्वाभिमान एवं धैर्य की जननी

महामहीम, अपराजिता भारतमाता को सहृदय 'वंदे मातरम!' कोटी कोटी प्रणाम!

माते, आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि, आप हमसे, समस्त प्रजा से, अपने पुत्रों से 100% नाराज हो! मैं भारत सरकार एवं भारतीय डाक का बहुत-बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने इस प्रतियोगिता के माध्यम से मुझे अपनी भावनाएं, अभिव्यक्तियाँ प्रस्तुत करने का एवं अप्रत्यक्ष रूप से भारत माता से वार्तालाप करने का सुअवसर दिया।

माँ, हमारे भारत देश का इतिहास स्वर्णिम, भूगोल व्यापक एवं साहित्य काफी विस्तीर्ण है। ऐसे तेजस्वी देश की आप जननी हो। हमें अभिमान है अपने आप पर! किंतु, हमारा इतिहास जितना उज्वल था, तथापि वर्तमान उतना नहीं हो। कारण - त्याग एवं बलिदान का अभाव! माते, याद है - जब आप पर परकीय सत्ताओं द्वारा आक्रमण हो आप बंदिस्त हो गई थीं, तब आपको परतंत्रता-पाश से मुक्त कराने कई हुतात्माओं ने हँसते-हँसते अपने प्राण आप पर न्योछावर कर दिये; किंतु आज... आज स्थीती विपरित है माँ! आज आप क्या.. अपनी सगी माँ-बहनों की रक्षा तक करना नवीनतम पीढ़ी को बोझ लग रहा है। कारण - आधुनिकता का प्रवेश व समय का अभाव। तभी तो आप को स्वयं भी असुरक्षित लग रहा होगा। क्षमा करें माँ!

माँ, मैं वास्तव विशद करना चाहता हूँ। भले ही वह कड़वा लगे; क्योंकि वह सत्य है। सत्य परेशान हो सकता है, लेकिन पराजित नहीं। ठीक उसी तरह आप संयम की मूर्ति होने की वजह से बेशक सहनशीलता में मग्न हो, अपने (क)पूतों के कारनामों से व्याथित हो; किंतु मैं आपकी व्यथा समझ रहा हूँ माँ। बेटा हूँ न आपका। क्यों हमारे अंतर्मन में केवल 15 अगस्त व 26 जनवरी के दिन ही देशभक्ति के झरने बहते हैं? क्यों इसी दिन हम देशभक्ति के गीतों को गुनगुनाते हैं? अन्य दिन क्या हमारी भारतमाता.. भारत-माता नहीं होती? यदि, हर दिन एक बार हम मन में 'वंदे मातरम' का जाप करें, तो यही हमारी आपके प्रति सच्ची श्रद्धा होगी। आपकी रक्षा एवं संवर्धन की खातिर यदि हम छोटी-छोटी बातों में पर्यावरण की देखभाल करें, प्रदूषण ना करें, कूड़ा ना फैलायें, जल एवं मृदा को बचायें, पेड़ लगायें, तो यही आपकी सही मायने में पूजा होगी। कोई जरूरत नहीं आपकी प्रतिमा स्थापन कर, दीपप्रज्वलन कर, भीड़ इकट्ठा कर छायाचित्रों में भारत-माता पूजन करने की! सही जरुरत है - मृदासंवर्धन की, वृक्षारोपण की, वनसंपदा जतन की एवं जलसंधारण की! माँ, मैं आपके सामने बहुत छोटा हूँ, हीन-तुच्छ हूँ, किंतु मन की तड़प को आप तक पहुँचा रहा हूँ, हो सकता है इस नयी, आधुनिक पीढ़ी को, तंत्रज्ञान-बाधित युवाजगत को आप 'तथास्तु' कह दें व यह देश का भविष्य सुचारु रुप से आपकी सेवा में व्यस्त हो आपको प्रसन्न कर दे।

Scanned by CamScanner

Above (18) 3rd prize

यहीं काट कर खोलिए TO OPEN CUT HERE

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

057153

भारतीय पोस्ट द्वारा
आयोजित
ढाई आखर पत्रलेखन स्पर्धा 2018,
चीफ पोस्टमास्टर साब (जनरल)
मुंबई सर्कल, मुंबई (महाराष्ट्र)
(महाराष्ट्र सर्कल)

(इस लाइन के नीचे न तो लिखें और न ही मुद्रित करें Do not write or print below this line) ____ पिन PIN 400001
भारत

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखें NO ENCLOSURES ALLOWED
पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS
प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—
गणेश चंद्रबलीजी गुप्ता (61 वर्ष)
मेन रोड, तांगा चौक, पुरानी बस्ती
मुर्तिजापूर, जि. अकोला (महाराष्ट्र)
पिन PIN 444107 भारत

PHILATELY: KING OF HOBBIES
CONTACT:
Nearest Philatelic Bureau
COLLECT
INDIA POSTAGE STAMPS

गर्व से कहो हम भारतीय है।
भारतीय [illegible] लिखते चलो !

पहला मोड़ FIRST FOLD — प्र.मु./S.P.P.,HYD.-2016

देश का भविष्य-युवापीढी खतरे में है माँ...
आपके बच्चे-बालक, आपकी गाथा से अपरिचित है,
अज्ञात-अनाभिज्ञ है मां, इन्हें वरदहस्त से आशीर्वाद
दीजिये मां, सद्‌बुद्धि, स्नेहआशीष का वर्षाव कीजिये
मां, चैन-विलास की धुंधली जीवनशैली से परास्त
कर इन्हें आत्मनिर्भर व संयमी बनाईये मां!
मनुष्य आजतक अपने से सर्वशक्तिमान सर्व
शक्तियों से मांगता ही आया है; मैं भी उन्हीं में से
एक हूं मां। बचा लो, इस पृथ्वी का विनाश, मां! अपनी
देदीप्यमान छवि से भारत का भविष्य भूतकाल की
तरह एवं वर्तमान की अपेक्षा सुजलाम-सुफलाम कर
दो मां। आखिर, वह मां ही होती है ना; जो अपनी
कोख से जन्मे बच्चों की ज़िद पूरी करती, इस
ज़िद की पूर्ति कीजिये, मां! भारतवर्ष बचा लीजिये मां!
सदैव आपका नतमस्तक, बेटा,
गणेशचंद्र गुप्ता।

Scanned by CamScanner